आपातकाल में सृजन फुलवारी

श्रुति कोचर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

श्रुति कोचर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-217-3
संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, श्रुति कोचर
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SHRUTI KOCHAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	नज़रबंद	6
2.	रात	7
3.	मदर्स डे	8
4.	तमन्ना	8
5.	माँ	9
6.	सफर	10
7.	परिवार	11
8.	यार की याद	12
9.	मेरे पापा	14
10.	परीक्षा की पढ़ाई	16
11.	थोड़ा मुस्कुरा दो!	17
12.	खुशियाँ मेरी	18
13.	अलविदा	19
14.	बचपन	20
15.	जिम्मेदारियाँ और मनमानियाँ	21

नज़रबंद

देखे थे कुछ सपने चंद दिनों पहले..
पूरे करने थे कुछ अरमान चंद दिनों पहले..
दी थी जो ढील जिंदगी की पतंग को,
चाहत थी उसे फिर उड़ाने की चंद दिनों पहले..

पर किसे पता था थम जाएंगे ये सारे ख्वाब इस कैद तले..
नजरबंद हो जाएंगे हम इन ख्वाहिशों के साथ शुरू होने से पहले..
हो गए हैं बंद जो घरों में अपने और रह गए अकेले..

हुआ एहसास कुछ गलतियों का जो ना की होती समय रहते..
कहते हैं इंसान सीखता है अपनी गलतियों से,
क्या है वह सिर्फ चुटकुले?

अब जो मिला समय,
हो रहे हैं महसूस वो मौके जो हर किसी को ना मिले..
बस दूर करना है अब जिंदगी से सभी अंधेरे,
और पूरे करना है अरमान जो रह गए हैं अधूरे इस कैद तले।

देखे थे कुछ सपने चंद दिनों पहले..!

रात

रात अंधेरी जब होती है, कुछ बात ये मुझसे कहती है,
बोल उठता है सन्नाटा भी, जब रात अंधेरी होती है।

सोच-सोच में ढल जाती है, ये रात मुझे कुछ बतलाती है,
बिन कहे सब कह जाती है, ये रात मुझे कुछ बतलाती है,
इस घनी रात के सिरहाने, आसमान में सजे चांद सितारे,
छत पर जब जब जाऊँ मैं, झिलमिल होते दिखते सारे,

करते करते चांद से बातें, न जाने कट गई कितनी रातें,
जो उदास रहूं मैं कभी, पास ये मेरे होती है
कोई न हो जब साथ मेरे, उस पल साथ ये होती है,
बातें करती है मुझसे, मेरे साथ ये भी रोती है,

गम बंट जाते हैं मेरे, जब बात रात से होती है
कहते-कहते जो मैं थक जाऊँ, फिर ये रात भी सोती है
पूछा मैंने एक रोज़ रात से, क्यों तू यू चुप रहती है
बाते सुनती है मेरी सारी, पर क्यों खुद कुछ न कहती है,

बोला कुछ ऐसा उसने, कैसे सब चुपकर सहती है
सोता है जब शहर सारा, कल के लिए वो जगती है
और रहकर खुद अंधेरे में, ज़िन्दगी मे उजाला वो भरती है
कुछ रात अंधेरी ऐसी भी आती है..
मेरी बातें सुनकर कुछ अपनी भी कह जाती है।

मदर्स डे

हर छोटी बात पर चिल्लाती है
और
हर बड़ी बात को छुपाती है
माँ
तू हर बार मेरी रक्षा कर
मेरा जहाँ बन जाती है।
और ये बात
सिर्फ मदर्स डे के लिए नहीं है
मुझे हर दिन के लिए
तुझसे प्यार है
मेरी जिंदगी में तो बस
एक तू ही सच्ची यार है...!
हाँ माँ! मुझे तुझसे प्यार है।

तमन्ना

तमन्ना तो दिल में हज़ार है
किसे कहूँ बस यही एक विचार है,
जो सुने और समझे
बताने में तभी तो कोई सार है,
पूरी करनी है सारी तमन्नाएँ,
जिंदगी में
दिन ही तो चार है,
जो न मिल पाये मौका
तो
ये जीवन ही बेकार है,..!

माँ

दिन भी वही है, रात भी वही है,
सूरज भी वही है, चाँद भी वही है,
हो खुद कितनी भी तकलीफ में
हमारी हर तकलीफ का हल भी वही है!

कान खींचती भी वही है,
सबसे जयादा प्यार भी वही जताती है,
गलती करने पर डांटती भी है
और
सही कदम बढ़ाना भी वही सिखाती है।

हो कितनी भी मुश्किल,
उन्हें पार करने का हौसला भी वही दे जाती है,
कभी पत्थर की तरह सख्त हो जाती है,
तो कभी फूल बनकर बरस जाती है।

सोचती हूँ माँ तुम्हारे बिना मैं कुछ नहीं,
तुम जहाँ होती हो सारी परेशानियाँ
खुद ब खुद दूर हो जाती है।

सफर

ये जिंदगी का सफर आसान तो नहीं
पर तुझे चलना तो है,
मुश्किल हजार आये राह में तेरी ऐ मुसाफिर,
उन्हें पार करना तो है!

चाहे कितना भी कठिन हो रास्ता
रुकना नहीं है तुझे बढ़ना तो है,
असफलता मिले भले तुझको जितनी
अपने अंदर विश्वास भरना तो है!

आज रख भरोसा खुद पर, कर सब्र थोड़ा
इस रात काली को छटना तो है,
भटकते बहुत रास्ते में मुसाफिर
एक दिन सबको मंजिल मिलना तो है,

प्यारी सी मुस्कान चेहरे पर रखकर
इस बार अपने से लड़ना तो है,
नहीं डगमगाना लक्ष्य से अपने
जीत के ध्वज को फहरना तो है।

परिवार

जिनके साथ उनका परिवार हो,
हर मुश्किल से वो पार हो।
नसीब मे जिनके सबका आशीर्वाद हो,
सफल हो चाहे सामने चुनौतियाँ हज़ार हो।

खौफ न हो कभी दिल मे कोई,
जब सिर पर बड़ों का हाथ हो।
गलती भी कोई कैसे हो जाए,
जब साथ उनकी डांट फटकार हो।

देर हो जाए कभी घर आने में तो,
दरवाजे पर दादा जी तैनात हो।
जवाब जो कभी दे दिया उल्टा,
तो दादी का भी दिल उदास हो।

कहे बिना ही बच्चे सुन ले,
पापा को भी तो आस हो।
जो बात न मानी उनकी मैंने,
तब मम्मी भी हो नाराज़ हो।

जो रह लूँ भाई बहन के साथ प्यार से।
उसमे न कोई बड़ी बात हो।
पर जब तक ना छेड़ूँ उनको।
कैसे खुद को खुद पर नाज़ हो।

जब तक थोड़ा गुस्सा-थोड़ा प्यार साथ न हो,
तब तक कैसे कोई सुखी संसार हो।
मै चाहूँ रहना सदा इनके साथ,
और हर बार यही मेरा परिवार हो।

यार की याद

यार तुम्हारी याद आ रही है..!
ये सोच-सोच कर अब कब मिलेंगे
यार मेरी जान जा रही है...!

देख कर उन तस्वीरों को बार बार
यार वो सारी बातें सता रही है..
बिताया हुआ हर वो लम्हा साथ, बन जायेगा एक याद
ये जानकर न यार थोड़ी मायूसी छा रही है..!

किसने सोचा था किसको पता था, जीते थे जिस पल में
यार अब उन पलों की भी कमी खा रही है..
वो रोज का अड्डा और शाम की चाय भी न
चीख-चीख कर हमे बुला रही है..!

बेवक़्त बेमौसम वो तुम लोगो की फरमाइश,
चल यार आज बाहर खाते है!
चल यार कहीं घूम के आते है!
मना करने पर वो इमोशनल अत्याचार,
और फिर कहते थे तू है ही बेकार,
तुम्हारी कही वो सारी बातें न
यार बस कानों में गूंजी जा रही है..!

घर से दूर एक घर जो पाया
याद न आये घरवालों की
तभी तो एक को बेटी और एक को माँ बनाया
थे भी तो बिल्कुल वैसे ही
मुश्किलों में एक ने सबको समझाया
तो दूसरे ने रो-रोकर सारा घर सिर पर उठाया
कमाल थे यार हम भी जब साथ होते थे..!

बस हो जाए कोई दुखी फिर भूलकर खुद का गम,
"क्यों चिंता करता है तेरा भाई है न" कहा करते थे..,
यार अब वो किस्से कहानियाँ कब सुन पाएगें
वो मुलाकाते कब दोहराएंगे,
इस खयाल से ही ना मेरी आँखे भर आ रही है..!

कुछ करो यार, जल्द ही मिलो यार,
क्योंकि सच में तुम्हारी बहुत याद आ रही है..!

मेरे पापा

जिन्हें प्यार कभी जताना न आया,
और गुस्सा कभी छुपाना न आया,
आखिर बेटी तो हूँ उनकी ही न,
बयान करना मुझे भी तो कभी न आया।

भले ही पसंद न हो खुद को बहुत सी चीजें,
अगर मांग लूँ कुछ मैं तो मना करना न आया,
स्वभाव से तेज़ और मन से सरल,
पर किसी का दिल दुखाना उन्हें कभी न आया।

हाँ मैं चिढ़ जाती हूँ आपकी बातों से अक्सर,
लेकिन आपसे प्यार है कितना मुझे वो बताना न आया,
बात तो करते हैं कम मगर ज़रा डांट दें कभी,
फिर उन आँसुओं को ठहराना न आया।

जो सुकून पापा को गले लग कर मिले,
वो सुकून इस दिल ने कहीं और न पाया,
बचपन से ही हर ख्वाहिश पूरी करते हैं,
चाहे गुस्से में ही क्यूँ न पर सबका ख्याल ज़रुर रखते हैं।

ऐसे तो कुछ नहीं कहते बस उनका आँख दिखाना ही काफी है।,
और पापा बात जो न मानी आज तक आपकी
उसके लिए दिल से माफी है,

ये बाते शायद मैंने कभी आपसे न कह पायी,
पर क्या करूँ पापा ये आदत भी तो आपसे ही आयी है।

बचपन से जिन उंगलियों को थाम कर चलना आया,
बाद मुश्किल में भी वही एक हाथ नज़र आया,
होते होंगे सबके पापा 'कूल एंड ऑल'
लेकिन मैंने तो मेरे पापा मे ही सारा जहान पाया।

उन्होंने चाहा कुछ और हुआ कुछ और हो,
पर मेरे फैसलों पे कभी न उन्होंने रोक लगाया,
बहुत सारा प्यार और काफी नोक-झोक के बाद ही तो,
ये रिश्ता इतना मज़बूत बन पाया।

बड़ी हो गई है पापा आपकी बेटी।
अब आपका गर्व से सीना तनने का समय आया,
बहुत खुशकिस्मत हूँ मैं,
जो भगवान ने आपको मेरे पापा बनाया।

परीक्षा की पढ़ाई

परीक्षा का समय जब पास आए,
हमारा दिल घबराता ही जाए..
न पढ़े आखरी दिन तक भी,
किताब तो एक रात पहले ही उठाए..

रोते रहे और पछताए,
क्यूँ हम पहले नहीं पढ़ पाए..
लेकिन जो बीत जाए एक परीक्षा,
हम फिर से वही दोहराए..

बनाकर कई योजनाएँ,
हम पढ़ने की उम्मीद जगाए..
कभी ग्रुप स्टडी के बहाने,
दोस्तो के घर खाने जाए..

तो कभी रात भर पढ़ने के नाम पर,
आधी रात को चाय बनाए..
भूल कर फिर सारी योजनाएँ,
हम तो बस नींद मे खो जाएँ,..

करके सारे प्रपंच हम,
फिर भी न पढ़ पाए..
नींद खुले जो परीक्षा के दिन,
सभी को बस यही कहता पाएँ,..

यार अब कुछ नहीं हो सकता,
अब तो बस भगवान बचाए..!

थोड़ा मुस्कुरा दो!

चलो अब थोड़ा मुस्कुरा दो!
जो हुआ उसे तुम भूला दो!
बीती बातों की उस किताब को,
आज तुम जला दो!

जो रह गए सपने अधूरे
अब उन्हे एक नया मक़ाम दो!
क्यूँ दुखी होते हो कल का सोच कर
जियो इस पल और
कल को अपने तुम खिला दो!

खुश रहा करो यार
जिंदगी का क्या भरोसा
आज है,
पर आगे किसे पता क्या हो?

कभी लगे
कि जिंदगी में कोई खुशी नहीं है
तो सोचना
जो है अगर वो भी न हो, तो क्या हो?

खुशियाँ मेरी

बयान करनी थी जो बातें,
वो बस बातें ही रह गई...
वो खुशियाँ मेरी जो तुमसे थी
कहीं गुम सी हो गई!

चाहत ऐसी तुझे पाने की,
वो बस चाहत ही रह गई,
जब जब सोचा तेरे बारे में,
आंखें नम सी हो गई,..

फिर सोचा किसी के आने-जाने से
जिंदगी कहाँ रुकती है,
मन से जिसकी कद्र हो
ये आँखें उन्हीं के आगे झुकती है,.

सोचा मन से कभी
तेरा बुरा ना चाहूँगी,
बिन तेरे भी सफल जीवन
जीकर दिखा दूँगी।

अलविदा

जाते-जाते मुड़ कर देखे तू
उम्मीद ये दिल को मेरे थी
न जाने कब कहां और कैसे
अब मेरी ये जिंदगी तेरी थी!

सोचा रोक लूँ इस पल को यहीं
न जाने दूं तुझे कहीं
कह दूं सारी बातें
जो अब तक मेरे मन में थी!

न जाना मैंने इस कदर दूर होगा तू,
न कह पाऊंगी वो बातें जो जरूरी थी,
जो जा चुका है मुंह फेर कर दूर यूं,
आंखों में नमी और होठों पर लिए हंसी!

भुला दी मैंने वो दिल की ख्वाहिश जो अधूरी थी,
मिलना किसी मोड़ पर इस सफर में अब
रास्ते टकराए फिर बात होगी जब
फिर जो हाल पूछे मेरा तू, तो ठीक ही बतलाऊंगी!

जो पूछे एक और सवाल
मैं कुछ ना कह पाऊंगी
उस पल में वही थम कर
इस सोच में पड़ जाऊंगी!

क्या सच में तू था जरूरी?
तेरा वो आखरी अलविदा?
या मैं खुद में ही पूरी थी!
जो खुद को खुद में खुश रहना सिखा दिया है मैंने..!
जा अब तुझे अलविदा किया है मैंने!

बचपन

कितने प्यारे थे वो दिन भी,
जब कहीं कोई रोक न थी,
होते थे सबके दुलारे,
लाख गलतियों के बाद भी कोई टोक न थी,.

जब मन करे रो लिया करते,
जो नींद आये तो सो लिया करते,
अब चाहे हँसना भी तो मुस्कान नहीं आती,
कोशिश कर थक जाए,
पर कम्बखत नींद नहीं आती,

जब भूख लगती थी कभी रात में,
तो माँ को जगा दिया करते,
अब जो खाना हो कुछ आधी रात को,
फिर छुप कर ही पेट भरते,
खाने के साथ डाट ना पड़ जाये,
बस इसी बात से है डरते,

वो बचपन मे जो रोये कभी,
तो सब गले लगा लिया करते,
पर अब तो एक गम बताने को भी,
सौ बार सोचा करतें है,

तब न कोई चिंता होती,
चंद खिलौनों से ही प्रसन्न हुआ करते,
अब जो मिल जाये मन चाहा भी तो,
और पाने का लालच है रखते,

अब हो गये है जो बड़े,
वापस बच्चा बनने को हैं मरते,
बचपन वाली मसूमियत अब नहीं है,
बच्चे होते तो सबका दुःख हरते।

जिम्मेदारियाँ और मनमानियाँ

समय के साथ साथ उम्र भी बढ़ती है,
जिम्मेदारियाँ और मनमानियाँ आपस में लड़ती हैं,

मनमानियाँ कहती हैं लम्बी कुछ छुट्टियाँ हो,
जिम्मेदारियाँ कहती हैं मनमानी से कुट्टी हो,

लगता है बचपन ही अच्छा था
दिल और दिमाग का मेल भी सच्चा था

अब तो जिम्मेदारियों का रोड़ा अड़ता है,
मन न भी हो वो काम करना पड़ता है,

सोचती हूँ दोनों की दोस्ती करा दूँ
अपने ख्वाबों से दोनो को हरा दूँ,

पर पकड़ न आये ये लम्हें है, निकलते हैं,
रेत की तरह हाथों से फिसलतें हैं,
फिर भी हम इनमें भी खुशी ढूंढ लेते हैं
कुछ मन का न हो तो आँखें मूँद लेते हैं।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

श्रुति कोचर

वार्ड नं.१४, सिनेमा चौक
कटंगी, जिला बालाघाट (म.प्र.)

Email- shrutijain961@gmail.com
7223019990, 9131177047

क्या लिखूँ मेरा टाइम पास जो मैंने दसवी कक्षा से शुरू किया था वो ही मेरा हुनर होगा कभी सोचा नहीं था, एक दिन मम्मी और अपने दोस्तों को अपनी कुछ कविता पढ़वाई, उन्होंने अच्छा कहकर प्रोत्साहित किया और मम्मी ने वो यूँ ही प्रीति चाची को भेज दी, और ये लॉकडाऊन मेरे लिए अवसर बन गया, मेरे लिए तो ये सब एक सपने की तरह ही है जो शायद मैंने अभी अभी देखना शुरू किया है।

इसके लिए मुझे मम्मी और चाची का विशेष थैंक्स कहना है, इनके कारण ही मुझे लेखन की दिशा मिली और इस मंच के द्वारा आप लोगों के बीच अपने विचारों को रखने का हौसला मिला।

सभी का दिल से धन्यवाद।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-217-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/